



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 102]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 19, 2000/आषाढ़ 28, 1922

No. 102]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 19, 2000/ASADHA 28, 1922

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 जुलाई, 2000

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (ग्रामीण या सामाजिक सेक्टर के बारे में बीमाकर्ता के दायित्व) विनियम, 2000

फा.सं. बी.वि.वि.प्रा./वि./7/2000.—प्राधिकरण, बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 32ख के साथ पठित धारा 32ग द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बीमा सलाहकार समिति के परामर्श से निम्नलिखित विनियम बनाता है:—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ - (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (ग्रामीण या सामाजिक सेक्टर के बारे में बीमाकर्ता के दायित्व) विनियम, 2000 है।

(2) ये, उनके राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) “अधिनियम” से बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) अभिप्रेत है;

(ख) “प्राधिकरण” से बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1994 का 41) की धारा 3 के उपबंधों के अधीन स्थापित बीमा विनियामक और विकास विकास प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(ग) “ग्रामीण सेक्टर” से कोई ऐसा स्थान अभिप्रेत है, जिसकी अंतिम जनगणना के अनुसार—

(i) जनसंख्या पांच हजार से अधिक नहीं है;

(ii) जनसंख्या की घनता प्रति वर्ग किलोमीटर चार सौ से अधिक नहीं है;

(iii) कम से कम पचहत्तर प्रतिशत कामकाजी पुरुष जनसंख्या कृषि में लगी हुई है;

(घ) “सामाजिक सेक्टर” के अन्तर्गत असंगठित सेक्टर, अनौपचारिक सेक्टर, आर्थिक रूप से भेद्य या पिछड़े वर्ग और ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में, व्यक्तियों के अन्य प्रवर्ग सम्मिलित हैं;

(ङ) “असंगठित सेक्टर” के अन्तर्गत स्वयंयोजित कर्मकार, जैसे कि कृषि श्रमिक, बीड़ी कर्मकार, ईंट भट्ठा कर्मकार, बढ़ई, मोची, निर्माण कर्मकार, मछुआरे, हमाल, हस्तशिल्प कारीगर, हथकरघा और खादी कर्मकार, महिला दर्जी, चमड़ा चर्मशोधन

कारखाना कर्मकार, पापड़ बनाने वाले, विद्युत चालित करघा कर्मकार, शारीरिक रूप से असुविधाग्रस्त स्वनियोजित व्यक्ति, प्राथमिक दुग्ध उत्पादक, रिक्शा चालक, सफाई कर्मचारी, नमक उत्पादक, रेखम के कीड़ों को पालने वाले कर्मकार, गन्ना काटने वाले, तेन्दु पत्ता इकट्ठित करने वाले, ताड़ी निकालने वाले, सब्जी विक्रेता, घोबी, पहाड़ों में कार्य करने वाली महिलाएं या व्यक्तियों के ऐसे ही अन्य समूह हैं;

(च) “आर्थिक रूप से भेद्य या पिछड़े वर्ग” से ऐसे व्यक्ति अभिप्रेत हैं, जो गरीबी की रेखा से नीचे निर्वाह कर रहे हैं;

(छ) “व्यक्तियों के अन्य प्रवर्ग” के अन्तर्गत ऐसे निःशक्तता ग्रस्त व्यक्ति हैं, जो निःशक्तता ग्रस्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1965 में परिभाषित हैं और जो अभिलम्भकारी रीति में नियोजित नहीं किए जा सकते; और इनके अंतर्गत ऐसे संरक्षक भी हैं, जिन्हें प्रमत्तित घातग्रस्त व्यक्तियों और निःशक्त व्यक्तियों के संरक्षण के लिए बीमा की आवश्यकता है;

(ज) इसमें प्रयुक्त सभी शब्दों और पदों के वही अर्थ हैं, जो क्रमशः बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) या बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) में परिभाषित हैं और उनके उन अधिनियमों में हैं।

2. दायित्व - प्रत्येक ऐसा बीमाकर्ता, जो बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) के प्रारंभ के पश्चात् बीमा कारबार चलाना प्रारंभ करता है, अधिनियम की धारा 32ख और 32ग के प्रयोजनों के लिए यह सुनिश्चित करेगा कि वह पहले पांच वित्तीय वर्षों के दौरान निम्नलिखित दायित्वों को पूरा करेगा:-

(क) ग्रामीण सेक्टर के व्यक्तियों के लिए-

(i) जीवन बीमाकर्ता के संबंध में उस वर्ष में सीधे लिखी गई कुल पालिसियों के-

- (I) पहले वित्तीय वर्ष में पांच प्रतिशत;
- (II) दूसरे वित्तीय वर्ष तकसात प्रतिशत;
- (III) तीसरे वित्तीय वर्ष में दस प्रतिशत;
- (IV) चौथे वित्तीय वर्ष में बारह प्रतिशत;
- (V) पांचवें वित्तीय वर्ष में पंद्रह प्रतिशत।

(ii) साधारण बीमाकर्ता के संबंध में उस वर्ष में सीधे लिखी गई कुल सकल प्रीमियम आय के-

- (I) पहले वित्तीय वर्ष में दो प्रतिशत;
- (II) दूसरे वित्तीय वर्ष में तीन प्रतिशत;
- (III) उसके पश्चात् पांच प्रतिशत।

(ख) सामाजिक सेक्टर के व्यक्तियों लिए सभी बीमाकर्ताओं के संबंध में,-

- (I) पहले वित्तीय वर्ष में पांच हजार जीवन;
- (II) दूसरे वित्तीय वर्ष में सात हजार जीवन;
- (III) तीसरे वित्तीय वर्ष में दस हजार जीवन;
- (IV) चौथे वित्तीय वर्ष में पंद्रह हजार जीवन;
- (V) पांचवें वर्ष में बीस हजार जीवन :

परन्तु यह कि पहले वित्तीय वर्ष में, यदि कार्य करने की अवधि बारह मास से कम है, तो आनुपातिक प्रतिशत या जीवन की संख्या के लिए दायित्व का पालन किया जाएगा:

परन्तु यह और कि साधारण बीमाकर्ता की दशा में, विनिर्दिष्ट दायित्व के अन्तर्गत फसलों का बीमा भी होगा:

परन्तु यह और भी कि प्राधिकरण सामान्यतः प्रत्येक पांच वर्षों की अवधि में एक बार विनियम 3 में विनिर्दिष्ट दायित्वों को विहित या पुनरीक्षित करता है।

3. विद्यमान बीमाकर्ताओं के दायित्व- (1) बी. वि. वि. प्रा. अधिनियम के प्रारंभ की तारीख को विद्यमान बीमाकर्ताओं के दायित्व, प्राधिकरण द्वारा उनके साथ परामर्श करने के पश्चात् विनिश्चित किए जाएंगे और किए जाने वाले बीमा कारबार की मात्रा उससे कम नहीं होगी, जो उन्होंने 31 मार्च, 2000 को समाप्त हुए लेखा वर्ष में अभिलिखित की है।

(2) प्राधिकरण बीमा कारबार को ऐसी मात्रा का कालिकतः पुनर्विलोकन करेगा और बीमाकर्ताओं को विनिर्दिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निदेश देगा।

एन. रंगाचारी, अध्यक्ष

[सं. विज्ञापन-3/4/असाधारण/161/2000]

INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY

NOTIFICATION

New Delhi, the 14th July, 2000

Insurance Regulatory and Development Authority (Obligations of Insurers to Rural Social Sectors) Regulations, 2000

F.No. IRDA/Reg/7/2000.—

In exercise of the powers conferred by section 32C read with section 32B of the Insurance Act, 1938, (4 of 1938), the Authority, in consultation with the Insurance Advisory Committee, hereby makes the following regulations, namely: -

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Insurance Regulatory and Development Authority (Obligations of Insurers to Rural or Social Sectors) Regulations, 2000.

(2) They shall come into force from the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.— In these regulations, unless the context otherwise requires -

(a) "Act" means the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);

(b) "Authority" means the Insurance Regulatory and Development Authority established under the provisions of section 3 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999);

(c) "Rural sector" shall mean any place as per the latest census which has—

- (i) a population of not more than five thousand;
- (ii) a density of population of not more than four hundred per square kilometer; and
- (iii) at least seventy five per cent. of the male working population is engaged in agriculture.

(d) "Social sector" includes unorganised sector, informal sector, economically vulnerable or backward classes and other categories of persons, both in rural and urban areas;

(e) "Unorganised sector" includes self-employed workers such as agricultural labourers, bidi workers, brick kiln workers, carpenters, cobblers, construction workers, fishermen, hamals, handicraft artisans, handloom and khadi workers, lady tailors, leather and tannery workers, papad makers, powerloom workers, physically handicapped self-employed persons, primary milk producers, rickshaw pullers, safai karmacharis, salt growers, seri culture workers, sugarcane cutters, tendu leaf collectors, toddy tappers, vegetable vendors, washerwomen, working women in hills, or such other categories of persons..

(f) "economically vulnerable or backward classes" means persons who live below the poverty line;

(g) "other categories of persons" includes persons with disability as defined in the Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights, and Full Participation) Act, 1995 and who may not be gainfully employed; and also includes guardians who need insurance to protect spastic persons or persons with disability;

(h) All words and expressions used herein and not defined herein but defined in the Insurance Act, 1938 (4 of 1938), or in the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), shall have the meanings respectively assigned to them in those Acts.

2. Obligations.--- Every insurer, who begins to carry on insurance business after the commencement of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), shall, for the purposes of sections 32B and 32C of the Act, ensure that he undertakes the following obligations, during the first five financial years, pertaining to the persons in---

(a) rural sector,

(i) in respect of *a life insurer*, --

- (I) five per cent. in the first financial year;
- (II) seven per cent. in the second financial year;
- (III) ten per cent. in the third financial year;
- (IV) twelve per cent. in the fourth financial year;
- (V) fifteen per cent. in the fifth year;

of total policies written direct in that year;

(ii) in respect of *a general insurer*,--

- (I) two per cent. in the first financial year;
- (II) three per cent. in the second financial year;
- (III) five per cent. thereafter,

of total gross premium income written direct in that year.

(b) social sector, in respect of all insurers, --

- (I) five thousand lives in the first financial year;
- (II) seven thousand five hundred lives in the second financial year;
- (III) ten thousand lives in the third financial year;
- (IV) fifteen thousand lives in the fourth financial year;
- (V) twenty thousand lives in the fifth year;

Provided that in the first financial year, where the period of operation is less than twelve months, proportionate percentage or number of lives, as the case may be, shall be undertaken.

Provided further that, in case of a general insurer, the obligations specified shall include insurance for crops.

Provided further that the Authority may normally, once in every five years, prescribe or revise the obligations as specified in Regulation 3.

3. Obligations of existing insurers.--- (1) The obligations of existing insurers as on the date of commencement of IRDA Act shall be decided by the Authority after consultation with them and the quantum of insurance business to be done shall not be less than what has been recorded by them for the accounting year ended 31st March, 2000.

(2) The Authority shall review such quantum of insurance business periodically and give directions to the insurers for achieving the specified targets.

N. RANGACHARY, Chairperson

[No. ADVT.-3/4/Exty/161/2000]